%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 700

NO. 374

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Simhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 803; A. R. No. 282-F of 1899 )

Ś. 1299

(१।) स्वस्ति श्री [।।] शाके(का)[व्दे] रत्न-नदा[क्षि-ध]रणिग[ण]-

(२।) न(ना)न्विते पौष कृष्ण द्वितीयायां वुधवारदिने शु-

(३।) भे श्रीमान् महेश्वरार्य्यः पाचकः पुन्यसिद्धये

(४।) श्रीसिहाचलनाथस्य [प्राददात् पुष्पमालिकां] [।] श्रीश-

(५।) क वरुषंवुलु १२९९ गुनेंटि पुष्य कृष्णा द्वि-

(६।) तीया वुधवारमु[नां]डु<2> पोट्नूरि महेश्व-

(७।) र पाचकंडु तनकु अभीष्टात्थसिद्धिगा श्री-

(८।) नरसि[ं]हनाथुनिकि नित्यमुन्नु ओक तिरुमाल-

(९।) नु तन मऋद प्रयागदासिकि पुण्यमु-

(१०।) गा नोक तिरुमालंग [रे ं]डु दि(ति)रुमाल कल-

(११।) कु नु अनवाल अन्नम गंडमाडलु पदि १० इच्चे-

(१२।) नु ई अन्नम नित्यमुन्नु रेंडु तिरुमा[लि]कलुन्नु तेचि पेटं[ग]-

(१३।) [लांडु] ई धम्म श्रीवैष्णव रक्ष

(१४।) श्री श्री श्री [।।]

<1. In the twelfth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 2nd December, 1377 A. D., Wednesday. The tithi of Dvitīya started in the evening.>